2024

20

109

राजस्थान सरकार

डॉ. भीमराव अम्बेड़कर फाउण्डेशन (अम्बेड़कर पीठ),

(सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग)

संविधान दिवस के अवसर पर राज्य स्तरीय निबंध लेखन प्रतियोगिता–2024

विषय :– "भारत के सामाजिक एवं आर्थिक विकास में डॉ. भीमराव अम्बेडकर का योगदान"

दिनांक :– 07.10.2025 (समय– 2 घंटा, पूर्णांक– 100 अंक)

स्तर :– विश्वविद्यालय / महाविद्यालय

कार्यालय उपयोग हेतु	मूल्यांकन हेतु

विद्यार्थी का नाम – कोमल आबासरा KOMAL ABASARA

पिता का नाम – भागीरथ आबासरा BHAGIRATH ABASARA

पता पिन कोड सहित – Vill- सरमालिया Dist- ब्यावर, राजस्थान (Pin Code : 305901)

कक्षा (BEFORE) B.Sc. (Maths) : III year

महाविद्यालय का नाम – S.D. Govt. College BEAWAR Now- Samrat Prithvi Raj Chouhan Govt. College AJMER (M.Sc. Physics I)

जिले का नाम – BEAWAR

मोबाईल न. – 6375807662

ई–मेल आई.डी. – komalabasara06062006@gmail.com

विद्यार्थी के हस्ताक्षर	वीक्षक के हस्ताक्षर
Komal	Rijum

Scanned with OKEN Scanner

भारत के सामाजिक एवं आर्थिक विकास में डॉ. डॉ. भीमराव अम्बेडकर का योगदान

109 107

92

निबंध की रूपरेखा :-

1.) प्रस्तावना

2.) डॉ अम्बेडकर : जीवन दर्शन एवं दृष्टि
   ↳ संघर्ष की भट्टी से निकला संविधान निर्माता

3.) भारत के सामाजिक विकास में बाबा साहब का योगदान
   "टूटा हुआ समाज" एवं "जुड़ा हुआ संविधान"
   - अस्पृश्यता का संवैधानिक उन्मूलन (अनु. 17)
   - शैक्षिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक अधिकार
   - पूना पैक्ट
   - समान नागरिक संहिता (UCC)
   - हिन्दू कोड बिल (HCB)

4.) भारत के आर्थिक विकास में बाबा साहब का योगदान
   : अर्थशास्त्री की दूरदर्शिता
   - कृषि एवं भूमि सुधार
   - औद्योगिकीकरण एवं मेक इन इंडिया

P.T.O

→ मजदूरों के अधिकार - 8 घंटे की कार्य सीमा
→ जल एवं ऊर्जा संरक्षण
→ RBI की स्थापना एवं मौद्रिक नीति

5) वर्तमान संदर्भ : विरासत बनाम वास्तविकता

6) निष्कर्ष : भविष्य की राह एवं संकल्प

① (प्रस्तावना) → क्या यह विडम्बना नही की स्वतन्त्रता के 75 वर्षों बाद भी भारत जातीय हिंसा, सामाजिक असमानता, बेरोजगारी एवं महंगाई जैसी समस्याओं से जूझ रहा है? "डिजिटल इंडिया" और "विकसित भारत 2047" का सपना हम देखते है किन्तु क्या हम उस भारत को गढ़ पाए है जिसका सपना डॉ. अम्बेडकर ने देखा था?

जब दलितो पर अत्याचारों की खबरे अखबारों में छपती है, शिक्षा एवं स्वास्थ्य आम आदमी के लिए अब भी विलासिता बने हुए है, आरक्षण पर उग्र बहस होती है तब लगता है कि हम अम्बेडकर जी के बताए मार्ग से भटक गए है।

बाबा साहब केवल संविधान निर्माता नहीं थे बल्कि भारत के सामाजिक न्याय के शिल्पी एवं आर्थिक विकास के दूरदर्शी विचारक थे।

उन्होंने समाज ... दृष्टि ... की ... भेद ... है ... थे

उन्होंने उस दौर में समता, न्याय और शिक्षा की मसाल जलाई, जब समाज गहरी विषमता एवं भेदभाव से जकड़ा हुआ था। उनकी दृष्टि केवल संविधान निर्माण तक सीमित नहीं थी बल्कि ऐसे भारत की थी जिसमें अवसरों की समता हो, स्त्री पुरुष के बीच कोई भेदभाव ना हो, दलित गरीब को सम्मान से जीने का हक प्राप्त हो। उन्होंने RBI की स्थापना एवं भूमी सुधार में अपना अमिन्न योगदान दिया है दलितों को समाज की मुख्य धारा में लाने हेतु आजीवन प्रयास किए तथा मुल्क का आईन अर्थात संविधान दिया जो आज के सभी प्रश्नों का एकमात्र उत्तर प्रदाता बना है।

यदि भारत को सचमुच में विश्वगुरु बनाना है तो आर्थिक विकास की गगनचुंबी इमारते काफी नही होगी बल्कि इसकी नींव में अम्बेडकर के सामाजिक न्याय एवं आर्थिक विकास के विचारों का गारा भी उतना ही जरूरी है।

"यह अरण्य झुरमुट, जो काँटे अपनी राह बनाले,
कीट दास नहीं वह किसी का, जो चाहे अपना ले।
जीवन नहीं उसका युधिष्ठिर, जो इससे डरते हैं,
उसका है जो चरण रोप, निर्भय होकर बढ़ते हैं।"

Scanned with OKEN Scanner

2. डॉ. अम्बेडकर : जीवन दर्शन एवं दृष्टि
संघर्ष की भट्टी से निकला संविधान निर्माता

डॉ. अम्बेडकर का जीवन किसी तपस्या से कम नहीं था। महु से लेकर न्यूयॉर्क (Columbia University) एवं London School of Economics तक की शैक्षणिक यात्रा उस समय के जातिगत आडम्बरों के विरुद्ध बुद्धिजीवी विद्रोह था। गरीबी, भेदभाव एवं जातिगत अपमान से जुझते हुए बाबा साहब ने शिक्षा को हथियार बनाया और कहा "शिक्षा वह शक्ति है, जिससे मनुष्य अपने अधिकारों के लिए लड़ना सीखता है"। बाबासाहब का दृष्टिकोण दो स्तरों पर स्पष्ट था -

उनका मूल मंत्र था - Educate, Agitate & Organise.

1) सामाजिक न्याय - "सामाजिक समता के बिना स्वतन्त्रता अधूरी है।"
2) आर्थिक विकास - "आर्थिक विकास के बिना लोकतन्त्र खोखला है।"

बाबा साहब का जीवन दर्शन शिक्षा, समानता, स्वतन्त्रता एवं बंधुत्व पर आधारित था। उनका मानना था कि सामाजिक न्याय एवं आर्थिक स्वतन्त्रता के बिना राजनीतिक स्वतन्त्रता का कोई अर्थ नहीं है।

Scanned with OKEN Scanner

"सभी तलाशते हैं रास्ता, अपने-2 ढंग से,
मिट्टी तले केंचुआ,
समुद्र में कोलम्बस,
जिद्दी शब्दों के घेरे में कवि,
गहन घोर अंधकार में एकाकी नक्षत्र,
बोधिवृक्ष तले बुद्धदेव।"

बाबा साहब जाति व्यवस्था के पुरजोर विरोधी थे। उनका मानना था कि यह व्यवस्था मनु के बाद ही अस्तित्व में आई है, अतः उन्होंने 25 Dec 1945 को मनुस्मृति को जलाकर हिन्दु धर्म मे व्यापना रूढिवादी विचारों का विरोध किया एवं एक ऐसे भारत का संकल्प लिया, जिसमें कोई किसी से छोटा-बड़ा ना हो।

(3) भारत के सामाजिक विकास में डॉ. अम्बेडकर का योगदान
"टूटा हुआ समाज" एवं "जुड़ा हुआ संविधान"

बाबा साहब अम्बेडकर का योगदान इतिहास की केवल घटना नहीं है बल्कि वर्तमान की कसौटी एवं भविष्य की रणनीति है। उन्होंने संविधान को "हम भारत के लोग" शब्दो से शुरु करके सम्पूर्ण अर्थ स्पष्ट कर दिया। उन्होंने शिक्षा को समानता का हथियार, धर्म को स्वतन्त्रता का आधार एवं संस्कृति को विविधता की पहचान बताया।

P.T.O.

① अस्पृश्यता का संवैधानिक उन्मूलन (A.R. 17) - भारत के सामाजिक ताने-बाने में अस्पृश्यता वह जंग थी जिसे बाबा साहब ने सबसे पहले दूर किया।
अन्त्यज्य संघ (1920), बहिष्कृत हितकारिणी सभा (July 19..), बम्बई अस्पृश्यता परिषद् (1925) जैसे संगठनों की स्थापना की जिनका उद्देश्य दलितों के लिए छात्रावास, पुस्तकालय एवं अध्ययन सुविधा मुहैया कराना था। इन्हीं उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु उन्होंने बहिष्कृत भारत (19..) नामक समाचार पत्र प्रकाशित किया जो दलितों को जागरूक करने का पुनीत कर्म करता रहा। बाबा साहब ने कई आन्दोलनों एवं सत्याग्रहों का स्वयं नेतृत्व किया एवं दलितों के मुक्तिदाता कहलाए।

1927 का महाड़ सत्याग्रह - पानी के प्रयोग को दलितों के लिए भी सुनिश्चित किया गया।
1930 का कालाराम मंदिर आंदोलन : दलितों को मंदिर प्रवेश की अनुमति प्राप्त हुआ।
1932 में कोयला खदानों में कार्य करने वाली महिला श्रमिकों को भी पुरुषों के समान वेतन प्राप्त हुआ।

② शैक्षिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक अधिकार - बाबा साहब ने समाज को संगठित करने के लिए

शिक्षा के अधिकार को मूल अधिकार बनाया एवं 14 वर्ष की आयु पूर्ण करने तक सभी बच्चों को निःशुल्क शिक्षा प्राप्त करने का अधिकार दिया।

धार्मिक स्वतन्त्रता के लिए A.R 25-28 के तहत सुनिश्चित किया गया कि कोई राज्य किसी भी धर्म विशेष का पक्षधर नहीं बनेगा किन्तु इसके नागरिक अपनी स्वेच्छानुसार किसी भी धर्म को मानने वाले हो सकते हैं।

सांस्कृतिक विविधता के लिए A.R. 29-30 के तहत प्रावधान किया गया कि कोई व्यक्ति या समुदाय अपनी भाषा, पहनावे एवं संस्कृति का प्रचार-प्रसार कर सकता है एवं धार्मिक संस्थान खोल सकता है।

③ पूना पैक्ट : 24 Sept 1932 को गांधीजी एवं डॉ. अम्बेडकर के बीच पूणे की यरवदा जेल में समझौता किया गया जिसके तहत ब्रिटिश प्रधानमंत्री मैकडोनाल्ड द्वारा प्रस्तावित पृथक् निर्वाचन प्रणाली के स्थान पर संयुक्त निर्वाचन प्रणाली को अपनाया गया एवं दलित वर्ग के लिए आरक्षण की व्यवस्था को अपनाया गया।

इसके तहत प्रान्तीय विधानमंडल में दलित वर्ग के लिए आरक्षित सीटों की संख्या 71 से बढ़ाकर 148 कर दी गई थी तथा केन्द्रीय विधानमंडल में 18% सीटें दलित वर्ग के लिए आरक्षित की गई।

④ समान नागरिक संहिता Uniform Civil Code [UCC]

UCC लम्बे समय से भारत में मुद्दा बना हुआ है। यह "एक राष्ट्र - एक कानून" के मत का समर्थक है। यह भारत में रहने वाले सभी नागरिकों के लिए विवाह, तलाक, दत्तक ग्रहण एवं उत्तराधिकार जैसे नीजि मामलों को नियान्त्रित करने वाला व्यक्तिगत कानून है।
(Personal Law)

इसके पक्ष में लैंगिक समानता, राष्ट्रीय एकता एवं धर्मनिरपेक्षता की मजबूती से जुड़े विषय शामिल हैं, जबकि इसके विपक्ष में विविधता पर संकट, धार्मिकस्वतन्त्रता को हानि एवं राजनीति से जुड़े मुद्दे शामिल हैं।

बाबा साहब ने UCC की वैकल्पिक प्रकृति को महत्व दिया एवं भारतीय संविधान में इसे अनु. 44 के तहत DPSP (नीति निदेशक तत्व) के रूप में शामिल किया गया।

⑤ हिन्दु कोड बिल Hindu Personal Law

बाबा साहब अम्बेडकर द्वारा तैयार यह बिल न केवल दलित वर्ग के लिए बल्कि सभी वर्गों के उत्थान के लिए आज तक अत्यन्त प्रभावी रहा है। यह महिला सशक्तिकरण की दिशा में महत्वपूर्ण कदम था। इसे लागू करवाने हेतु बाबा साहब ने कानून मन्त्री के पद से इस्तीफा तक दे दिया परन्तु यह

Scanned with OKEN Scanner

सभा में पास न हो सका। बाबासाहब ने इसके उपभाग बनाकर इसे संसद द्वारा पास करवाया, जिनमें निम्न प्रावधान शामिल हैं -

↳ Hindu Marriage Act. [1955] [HMA]

- विवाह की न्यूनतम आयु (M-21; F-18)
- बहुविवाह (Polygamy) पर रोक।
- एक पति-एक पत्नी (Monogamy) की व्यवस्था।
- अन्तरजातीय एवं अन्तरवर्णीय विवाह को मान्यता।
- तलाक एवं न्यायिक अलगाव की व्यवस्था। (Divorce) (Judical Seperation)

↳ Hindu SuccessionAct [1955] [HSA]

- महिलाओं का भी पति की सम्पत्ति में समान अधिकार।
- पुत्र एवं पुत्रियों का पैतृक सम्पत्ति में अधिकार।

↳ Hindu Minority & Gyardianship Act [HMGA]

- अनाथ बच्चो की देखरेख एवं उनकी सम्पत्ति से जुड़े नियम माता एवं पिता को दोनों का अभिभावक माना गया किन्तु पिता को प्राथमिक अभिभावक का दर्जा दिया गया।

Scanned with OKEN Scanner

C Hindu Adarption & Mentainance Act [HAMA]-1956]

{ पुत्र एवं पुत्रीयों दोनों को गोद लेने का आधीकार
{ विधवा स्त्रीयो को भी गोद लेने का आधीकार

इसके अतिरिक्त "दलित वर्गीय महिला सम्मेलन" (1942) में 50,000 महिलाओं के जत्थे को बाबा साहब ने सम्बोधित किया एवं उन्हें उनके आधीकारो के प्रति जागरूक किया एवं कहा - "मैं किसी समाज की प्रगति का आकलन उसमें महिलाओं की स्थिति से करता हूँ।"

इसी क्रम में सेपरेट सेटलमेंट द्वारा बाबा साहब ने एक एक जाति (अछूत) की दूसरी जाति (सवर्ण समाज) पर निर्भरता का अंत किया एवं समता, स्वतन्त्रता एवं न्याय युक्त भारत की नींव रखी

"मैंने तो उपहार दिए हैं, मौलिक दिए आधीकार दिए हैं,
धर्म-कर्म-संस्कार दिए हैं, जीने के आधीकार दिए हैं,
मेरे वादे समता के हैं, दीन-दुखी और ममता के हैं।"

Scanned with OKEN Scanner

4.

भारत के आर्थिक विकास में डॉ. B.R. अम्बेडकर का योगदान: अर्थशास्त्री की दूरदर्शिता

भारत के आर्थिक इतिहास में जब भी दूरदृष्टा विचारकों की बात होती है तो अम्बेडकर जी का नाम स्वर्णाक्षरों में लिखा जाता है। वे आधुनिक भारत के "विज़नरी अर्थशास्त्री" थे। उन्होंने आर्थिक समता, स्वतन्त्रता युक्त विकसित भारत की दिशा में महत्वपूर्ण योगदान दिए -

① भूमी एवं कृषि सुधार :- भारत की अर्थव्यवस्था की रीढ हमेशा से कृषि रही है। बाबा साहब ने देखा कि जमींदारी व्यवस्था ने किसानो को गुलाम बना रखा है, अतः बाबा साहब ने इसका जमकर विरोध किया एवं भूमी के न्यायपूर्ण वितरण एवं सामुहिक कृषि की वकालत की। उनका मानना था कि किसान की मुस्कान में ही भारत की समृद्धि निहित है।

② औद्योगिकीकरण एवं मेक इन इंडिया :- किसानों ने कृषि को ईश्वर प्रदत्त नियती माना किन्तु बाबा साहब ने इसपर तंज कसा और कहा - " ईश्वर ने किसानो को हल तो दिए किन्तु मशीनें क्यों नहीं दी। जब तक कारखाने नहीं लगेंगे पेट आधा भरा ही रहेगा।"

P.T.O.

कृषि पर आधारित व्यवस्था लम्बे समय तक स्थिर नहीं रह सकती अतः उन्होंने तीव्र औद्योगिकीकरण पर बल एवं योजनाबद्ध विकास पर महत्व दिया। उन्हीं के प्रयासो के कारण आज "मेक इन इंडिया" का नारा दिया जाता है जो उनकी दूरगामी सोच का परिचायक है। (भारत में बनाओ)

(3.) मजदूरो के अधिकार - बाबा साहब ने मजदूरों को शोषणमुक्त करने, सम्मान जनक जीवन देने हेतु कई अधिकार दिए एवं निम्न प्रावधान किए -

1) मजदूरों के कार्य करने की समयसीमा तय करवाई।
"8 घंटे काम, 8 घंटे आराम, 8 घंटे परिवार के नाम।"
2) मजदूरो के लिए भविष्य निधि एवं मजदूर बीमा जैसी योजनाओं की नींव रखी।
3) श्रमिकों के वेतन, भत्ते, अवकाश, मातृत्व लाभ, चिकित्सा सुविधाएं सुनिश्चित की।
4) महिला श्रमिको को भी पुरुषों के समान अधिकार दिए।

बाबा साहब ने ये प्रावधान भारतीय संविधान में मूल अधिकार एवं DPSP (नीति निदेशक तत्वो के तहत जोड़े।

उन्हीं महत्वपूर्ण प्रावधानों को जोड़ने के कारण आज भारत का श्रम कानून विश्व के सबसे सशक्त ढांचों में गिना जाता है।

(4) जल एवं ऊर्जा संरक्षण :- बाबा साहब ने जल को प्राकृतिक साधन नहीं माना बल्कि राष्ट्रीय सम्पत्ति का दर्जा दिया। उनके नेतृत्व में 1945 में Central Waterways, Irrigation & Navigation Comession का गठन हुआ। उन्होंने दामोदर घाटी, हीराकुण्ड एवं सोन नदी जैसी ~~बहुउद्दीय~~ बहुउद्देशीय योजनाओं की रूपरेखा तैयार की एवं इनसे सिंचाई एवं विद्युत उत्पादन की कल्पना की ताकि कृषि एवं उद्योग दोनों क्षेत्रों को लाभ हो सके। उन्होंने इसी कारण उन्हें "भारत का प्रथम जल नीति निर्माता एवं ऊर्जा योजनाकार" कहा गया।

(5) RBI एवं मौद्रिक नीति :- डॉ. अम्बेडकर ने अपने पुस्तक The Problem of Rupee : Its origin & Solution में भारत की मुद्रा व्यवस्था की कमीयों एवं समाधानो की चर्चा की। उन्ही के विचारो से प्रभावित होकर 1935 में RBI (भारतीय रिजर्व बैंक) की स्थापना हुआ जो भारत के वितीय तंत्र की सबसे बड़ी उपलब्धि है। उन्होंने मुद्रा के स्थीरीकरण एवं मौद्रिक ढांचो मे सुधार की बात की।

Scanned with OKEN Scanner

(5) वर्तमान संदर्भ : विरासत बनाम वास्तविकता

आज किसान सूखे एवं बाढ दोनों समस्याओं से जूझ रहा है, टैंकरो की बोली लग रही है. तब लगता है कि हम अभी भी 19वीं सदी मे अटके हुए हैं।

अम्बेडकर के सपनो का भारत अभी दूर है क्योंकि भारत में अनेको समस्याएं अभी भी व्याप्त है, जिनके निदान का स्वप्न ~~आस~~ अम्बेडकर ने देखा था। जैसे -

- मंहगाई - GDP, ब्याज की बढ़ती दरे, पेट्रोल डीज़ल की कीमतों में वृद्धि जैसी अनेको कारक भारत को मंहगाई की ओर ~~ध~~ धकेल रहे ~~थ~~ है। बाबा साहब ने रुपये को स्थिर करने की बात कही थी किन्तु ऐसा लगता है कि रुपया रोज डॉलर के पीछे भागते-2 थक गया है। मंहगाई के दिन प्रतिदिन बढ़ने की स्थिति आभास कराती है कि -

"कुछ दिनो बाद फोन कॉल लगाते ही आवाज आएगी,
महँगाई एक बीमारी है, इससे बचे.
कम खाए, फटे पुराने कपड़े पहने
जितना हो सके पैदल चले, पैट्रोल वाली गाड़ीयो का प्रयोग ना करें,
गैस सिलेण्डर को तो भूल ही जाए, चूल्हे का प्रयोग करें।
याद रहे हमे मंहगाई से लड़ना है, हुकुमत से नहीं.
अतः अपने घरो मे चुपचाप बैठे रहे, धरना प्रदर्शन बिलकुल ना करे।"

उपरोक्त पंक्तियां केवल व्यंग्य मात्र न होकर भविष्य के भारत की चेतावनी है, अतः हमें अम्बेडकर की मौद्रिक नियन्त्रण के उपायों को अपा अपनाना होगा। ।

> **भ्रष्टाचार** : बढ़ती मंहगाई के कारण आज भ्रष्टाचार अपनी जड़े फैलाता जा रहा है एवं कालाबाजारी तथा जमाखोरी को जन्म दे रहा है। आज भारत का प्रत्येक नागरिक किसी न किसी प्रकार भ्रष्ट तन्त्र की चपेट में आ रहा है, क्योंकि

"एक आदमी रोटी बेलता है, एक आदमी रोटी खाता है,
एक तीसरा आदमी भी है,
जो न रोटी बेलता है, न रोटी खाता है,
वह सीर्फ रोटी से खेलता है।
मैं पूछती हूँ वह तीसरा आदमी कौन है?
मेरे देश की संसद मौन है।"

> **आरक्षण की रस्सी पर लटकता विकास** : बाबा साहब ने आरक्षण गरीब एवं दलित वर्ग को समाज की मुख्य धारा मे लाने एवं उनकी आर्थिक उन्नति स्थापित करने के उद्देश्य से प्रावधानों मे जोड़ा था किन्तु वर्तमान में व्यक्तिगत हितों की पूर्ति हेतु नेता, डॉक्टर, अधिकारी इत्यादि बनने हेतु एवं अधिक धन की लालसा में आमजन आरक्षण की व्यवस्था का गलत प्रयोग कर रहा।

Scanned with OKEN Scanner

यह व्यक्ति अपने लाभ हेतु आरक्षण को रस्सी की भांति प्रयोग करके उच्च पदों पर आसीन हो रहा है तथा भ्रष्ट तन्त्र का निर्माण कर रहा है जो देश के विकास में बाधक है।

▷ "एक व्यक्ति, एक वोट, एक मूल्य" को चुनौति :- आज धनबल, बाहुबल, जातिबल के धौंस के कारण भारत का लोकतन्त्र खतरे में है। जब सभी व्यक्तियों के मतों की आवाज को समान नहीं गिना जाए तो लोकतान्त्रिक व्यवस्था पतन की ओर जाती है।

आज हमें अपने वोट के मूल्य को समझना होगा और योग्य व्यक्ति को तन्त्र का हिस्सा बनाना होगा ताकि भविष्य में भारत विकास और उन्नति के मार्ग पर चल सके।

6. निष्कर्ष :- भविष्य की राह एवं संकल्प

जिस तरह मानव ने आदिम सभ्यता से वर्तमान तकनीकि युग तक का सफ़र अपनी जीजिविषा से तय किया है उसी तरह यह बात अंगद के पांव की तरह अटल है कि इन समस्याओं का समाधान भी जल्द ही पा लिया जाएगा, किन्तु हमें अपने अतिरिक्त प्रयासों से

इस समय सीमा को कम करना होगा और वह सत्य होगा कि लोहे के पेड़ हरे होंगे।

समाधान स्पष्ट है, हमें अम्बेडकर के बताए मार्ग पर चलना हो, सामाजिक न्याय को सख्ती से लागू करना होगा, आर्थिक संसाधनो का न्यायपूर्ण वितरण करना होगा, गरीब दलित को विकास की मुख्य धारा मे लाना होगा, मुद्दा पर नियन्त्रण पाना होगा। तथा साथ ही महंगाई, बेरोजगारी, भ्रष्टाचार, आरक्षण के सही उपयोग जैसे मुद्दो को गंभीरता से लेना होगा तभी समता, स्वतन्त्रता एवं बंधुत्व का सपना सच हो पाएगा। अम्बेडकर जी का मानना था कि "कोई संविधान कितना भी बुरा हो वह अच्छा साबित हो सकता है यदि उसका प्रयोग करने वाले लोग अच्छे हो, तथा कोई संविधान कितना भी अच्छा हो बुरा साबित हो सकता है, अगर इसका उपयोग करने वाले लोग बुरे हो।" अतः हमें अच्छे लोग बनकर लोकतान्त्रिक मूल्यों को अपनाना होगा एवं विकसित भारत के स्वप्न को साकार करना होगा।

आज हमें अम्बेडकर के विचारो को नारों एवं स्मारको तक सीमित नही करना चाहिए एवं संविधान को पूजने या इसके प्रावधानों को दीवार पर टांगने की बजाए इसे पढ़ने एवं अपने जीवन में अपनाने की जरूरत है।

P.T.O.

Scanned with OKEN Scanner

"अपने हर लफ्ज़ का खुद आईना हो जाऊंगा,
तुझे छोटा कहकर, मैं कैसे बड़ा हो जाऊंगा।
तुम मुझे गिराने में लगे हो, तुमने सोचा ही नहीं,
गर मैं गिरा तो मुद्दा बनकर खड़ा हो जाऊंगा।
चलने दो मुझे, बाकि है मेरा सफ़र,
गर मुझे रोका गया तो काफिला हो जाऊंगा।"

#जय भारत, जय भीम, जय संविधान #

राजस्थान सरकार
डॉ. भीमराव अम्बेड़कर फाउण्डेशन (अम्बेड़कर पीठ),
(सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग)

2

102

संविधान दिवस के अवसर पर राज्य स्तरीय निबंध लेखन प्रतियोगिता–2024

विषय :– "भारत के सामाजिक एवं आर्थिक विकास में डॉ. भीमराव अम्बेडकर का योगदान"

दिनांक :– 07.10.2025 (समय– 2 घंटा, पूर्णांक– 100 अंक)

स्तर :– विश्वविद्यालय / महाविद्यालय

कार्यालय उपयोग हेतु	मूल्यांकन हेतु

विद्यार्थी का नाम – प्रिया पारीक

पिता का नाम – श्री अन्नराज पारीक

पता पिन कोड सहित – सरवाड़ (305403) जिला-अजमेर राज.

कक्षा – BA-BED 4th PART

महाविद्यालय का नाम – श्री मिश्रीलाल दुबे महिला शिक्षण प्रशिक्षण महाविद्यालय केकड़ी (अजमेर)

जिले का नाम – अजमेर

मोबाईल न. – 6376896508, 6376919831

ई–मेल आई.डी. – Priya.pareek2004@gmail.com

विद्यार्थी के हस्ताक्षर

प्रियापारीक

वीक्षक के हस्ताक्षर

Scanned with OKEN Scanner

—: निबन्ध लेखन :—

91

102

सामाजिक व आर्थिक विकास मे बाबा साहेब का योगदान

रूपरेखा :—

प्रस्तावना
सामाजिक विकास मे बाबा साहेब का योगदान
आर्थिक विकास मे बाबा साहेब का योगदान
सामाजिक व आर्थिक विकास के उद्देश्य
मुल मंत्र
प्रमुख कृतिया
प्रासंगिकता
पुरस्कार व सम्मान
उपसंहार
श्लोगन, अनमोल वचन
विशेष कथन

"Be educated
be organised
and
be Agitated"
— BR Ambedkar

Scanned with OKEN Scanner

① प्रस्तावना :—

बाबा साहेब, स्वतंत्र भारत के संविधान के निर्माता "डॉ. भीमराव अम्बेडकर" बहुआयामी प्रतिभा के धनी थे वे उत्कृष्ट बुद्धिजीवी सफल राजनीतिज्ञ अर्थशास्त्री व समाजशास्त्री थे व जनप्रिय नायक थे।

डॉ. अम्बेडकर का जन्म "14 अप्रैल 1891" इन्दौर के समीप महू छावनी के महार जाति दलित परिवार मे हुआ था। उनके पिता का नाम "रामजीसकपाल" व माता का नाम "भीमा बाई" था।"

भारत रत्न डॉ. अम्बेडकर सामाजिक आर्थिक आन्दोलन के ऐसे पुरोधा रहे थे जिन्होने ने जीवन्तपर्यन्त समाज की बेहतरी के लिए कार्य किया।

डॉ. "अम्बेडकर का सम्पुर्ण जीवन, दमन, शोषण अन्याय के विरूद्ध अनवरत क्रान्ति की शौर्य गाथा है समता बन्धुता न्याय पर आधारित उनके स्वप्न का समाज "सबका साथ सबका विकास" की अवधारणा को स्वीकार करके प्राप्त किया जा सकता है

* 2

सा

मह
व

*2 सामाजिक विकास मे बाबा साहेब का योगदान :-

महानायक डॉ. अम्बेडकर जी सार्वजनिक बौद्धिक सामाजिक क्रान्तिकारी व एक विशाल क्षमता सम्पन्न विचारक है।

बाबा साहेब ने सामाजिक आर्थिक स्थितियो का विश्लेषण किया तथा शोषितो, श्रमिको, महिलाओ के मुक्तिदाता बने। "समन्वय तथा सामरिक समरसता" पर आधारित उनके विचार राष्ट्रीय प्रयास को प्रेरित करते है।

"दलितो के मसिहा" कहे जाने वाले "डॉ. भीमराव अम्बेडकर के सम्पुर्ण जीवन का सर्वप्रमुख एक मात्र लक्ष्य था :- "दलितो का उद्धार"

सामाजिक विकास के योगदान के बिन्दु निम्न लिखित है।

(i) अस्पृश्यता के विरुद्ध संघर्ष :-

बाबा साहेब ने मानव - मानव के मध्य असमानता, छुआछुत, ऊँचनीच को मिटाने मे अपना विशेष योगदान दिया

"धर्म मनुष्य के लिए बनाए
ना कि मनुष्य धर्म के लिए"

अस्पृश्यता के विरुद्ध बाबा साहेब का प्रथम संगठित प्रयास 20 जुलाई 1924 को बहिष्कृत हितकारीणी "सभा" की स्थापना करना था।

"बहिष्कृत हितकारीणी सभा" का उद्देश्य शिक्षा व समानता का प्रसार करके बहिष्कृतो का उद्धार करना था।

बाबा साहेब ने सन 1930 मे अस्पृश्य समाज सस्था व अखिल भारतीय दलित वर्ग संघ की स्थापना की थी

बाबा साहेब के अथक प्रयासो के परिणाम स्वरूप संवि० के अनु० 17 मे अस्पृश्यता को गैर कानुनी घोषित किया गया है।

Scanned with OKEN Scanner

(ii) शिक्षा की चेतना :-

बाबा साहेब शिक्षा को "मुक्ति का साधन" व समाज मे जागृति उत्पन करने वाला मानते थे।

* बाबा साहेब ने ज्ञान के प्रसार के लिए "अस्पृश्य समाज शिक्षण संस्था" महाराष्ट्र मे "मिलिन्द महाविद्यालय" तथा "जनता शिक्षा समाज" संस्था की स्थापना की थी।

* "बहिष्कृत हितकारीणी सभा" के द्वारा कई छात्रावास पुस्तकालय व छात्रवृतियो का आरम्भ ज्ञान वर्धन हेतु किया गया।

* 7 नवम्बर 1900 को बाबा साहब के शैक्षिक जीवन की शुरुआत हुई थी

विशेष :- 7 नवम्बर को महाराष्ट्र मे विद्यार्थी दिवस के रूप मे मनाते है।

Scanned with OKEN Scanner

(iii) आरक्षण नीति का प्रबन्धन :-

बाबा साहेब ने वंचित वर्ग को अवसर प्रदान के उद्देश्य से आरक्षण नीतियो का प्रारम्भ किया था।

* बाबा साहेब ने वंचितो मे आरक्षण को "बैसाखी" नही बल्कि विकसीत व सशक्त होने का "अधिकार" बताया ताकि वे स्वंय के पैरो पर खड़े हो सके।

* बाबा साहेब के अथक प्रयासो के परिणाम स्वरूप संवि. के अनु. 334 मे आरक्षण नीतियो का प्रावधान है।

(iv) स्त्रियो का सशक्तिकरण :-

* बाबा साहेब ने "अखिल भारतीय शोषित वर्ग संघ" सम्मेलन का आयोजन महिलाओ की जागृति के लिए किया था।

* "मुक नायक" व "बहिष्कृत भारत" जैसे कृतियो से महिला-

कल्याण के लिए जागृति फैलाई व आवाज उठाई थी।

५ मैं किसी समाज की उन्नति को
महिलाओं की उन्नति से
मापता हूँ।"

(V) हिन्दू कोड बिल व साहित्य लेखन

* बाबा साहेब ने महिलाओं को विवाह तलाक उत्तराधिकारी के मामलो मे सम्मान व अधिकार देने के लिए "हिन्दू कोड" बिल पेश किया था।

* "जाति उन्मूलन" व "शुद्र कौन थे" जैसे साहित्य लेखन के द्वारा सामाजिक विकास मे महत्वपूर्ण योगदान दिया था।

(VI) मानवअधिकार व सम्मान :-

दलित वर्ग के लिए "मौलिक अधिकार" सुरक्षित नही होंगे तब तक "स्वराज" की कल्पना अधुरी ही है।

बाबा साहब ने महाड के "चौदार तालाब सत्याग्रह" मे "सार्वजनिक जल स्त्रोत" तक पहुचने का अधिकार प्राप्त किया था।

25 दिसम्बर 1927 को बाबा साहब द्वारा "मनुस्मृति की प्रतिया" जलाई गई थी यह पुरोहित वर्चस्व व जातिवाद के विरोध मे था।

विशेष :- अम्बेडकरवादी 25 दिस. को "मनुस्मृति दहन" दिवस मनाते है।

1935 मे कालाराम मन्दिर मे दलितो के प्रवेश हेतु आन्दोलन किया था।

* बाबा साहेब द्वारा संविधान मे "सामाजिक न्याय" का प्रावधान शामित करवाना प्रमुख है।

③ आर्थिक विकास मे बाबा साहेब का योगदान :-

बाबा साहेब के आर्थिक विचार भारतीय अर्थव्यवस्था के मार्गदर्शक है साथ ही आर्थिक स्वतंत्रता व स्थिरता की दिशा मे भी आगे ले बढाने का प्रयास किया है।

बाबा साहेब के आर्थिक सुझावो के आधार पर कई आर्थिक सुधार किए गए जिनमे श्रम कानुन, भुमि सुधार जल परियोजना प्रमुख है।

अर्थशास्त्र बाबा साहेब का प्रिय विषय था।

P.To.

विशेष

The problem of rupee : it's origin and it's solution.

यह बाबा साहेब की भारतीय आर्थिक इतिहास पर लिखित कृति है इसमें "मुद्रा स्फीति" व "मुद्रा सुधार" के मुद्दो पर बाबा साहेब की गहन अन्तर्दृष्टि को दर्शाया गया है।

(i) भारतीय रिजर्व बैंक का सुझाव :-

* बाबा साहेब ने ऐसे बैंक की कल्पना कि थी जो देश मे मुद्रा, सरकारी वित्त, व बैंको का संचालन कर सके।

* The Problem of rupee मे बाबा साहेब ने "भारतीय रिजर्व बैंक" की रूपरेखा प्रस्तुत की थी।

* 1 अप्रैल 1935 को RBI की स्थापना की गई थी

((अपने कर्म मे विश्वास करो
भाग्य में नहीं))

I.Jo.

(ii) औद्योगिकरण द्वारा आर्थिक विकास :-

* बाबा साहेब ने कृषि भूमि के राष्ट्रीयकरण का सुझाव व औद्योगिकरण को आवश्यकता पर बल दिया था।

x बाबा साहेब ने कृषि पर आधारित अर्थव्यवस्था की समस्याओं के निराकरण व समग्र आर्थिक विकास के लिए तीव्र औद्योगिकरण की वकालत की थी

* सन् 1926 में "ट्रेड युनियनो" की मान्यता के लिए "भारतीय व्यापार संघ" विधेयक बाबा साहेब द्वारा लाया गया था।

IV * समग्र व विकास द्वारा आर्थिक प्रगति :-

* बाबा साहब ने "समावेशी" व "न्यायसंगत" अर्थव्यवस्था की कल्पना की थी जहाँ सभी को समान अवसर प्राप्त हो।

* बाबा साहेब का मानना था कि आर्थिक विकास तभी सच्चा "सार्थक" हो जब सब को लाभान्वीत करे।

(V) स्वरोजगार व भुमि सुधार :-

बाबा साहेब ने स्वरोजगार के सन्दर्भ मे "मजबुर" होने के बजाय "मजबुत" बनने की बात कही थी।

मध्यम व लघु उद्योगो को बढावा देकर स्वरोजगार के सवार्धिम अवसर की बात कही थी।

कृषि भुमि का "सामुहिकरण" व "राष्ट्रीयकरण" करने की वकालत बाबा साहेब द्वारा कि गई।

भुमिहिन किसानो को "कृषि योग्य भुमि" वितरण की वकालत बाबा ने की थी।

VI श्रम सुधार द्वारा आर्थिक विकास :-

बाबा साहेबने सन 1942 से 1946 तक श्रम मन्त्री के रूप मे कार्यभार सम्भाला इस अवधि मे श्रम सुधार को गति मिली थी।

* बाबा साहेब ने सन् 1936 में "स्वतंत्र लेबर पार्टी" की स्थापना की थी।

x बाबा साहेब ने "राइट टू स्ट्राइक" व मजदुर सत्याग्रह का समर्थन श्रम कल्याण हेतु किया था।

VII* जल परियोजना का विकास :-

* बाबा साहेब ने "जल संसाधन के प्रबंधन" के लिए "बहुउद्देशीय क्रान्तिकारी" योजनाएं चलाई थी।

* सोन नदी, दामोदर नदी महानदी को बाबा साहेब ने "नदी घाटी परियोजना" में शामिल करवाया था।

* बाबा साहेब का मानना था कि नदीघाटी परियोजनाएं बेहतर सिंचाई उपलब्ध कराएगी इससे कृषि उत्पादन स्थिर होगा व आर्थिक विकास को बढ़ावा मिलेगा।

P.T.O

विशेष

"नोबल पुरस्कार" से सम्मानित "अमर्त्य सेन ने अम्बेडकर जी को "Father of my economy" कहकर सम्मान दिया था।

4. सामाजिक व आर्थिक विकास के बाबा साहब के उद्देश्य :-

(1) सामाजिक उद्देश्य

* न्याय व सम्मान :- बाबा साहब एक व्यक्ति, एक वोट, एक मूल्य की "अवधारणा को मानते थे तथा समता, बन्धुता व न्याय पर आधारित समाज का लक्ष्य रखा।

* महिला व श्रमिक सशक्तिकरण :- शिक्षा व सशक्तिकरण द्वारा महिलाओं व श्रमिकों को सशक्त करने का लक्ष्य रखा था।

Scanned with OKEN Scanner

* वर्गहीन समाज :- बाबा साहेब ने ऐसे समाज की कल्पना की जहा योग्यता "जन्म" से नही "कर्म" से निर्धारित हो।

(ii) आर्थिक उद्देश्य :-

* बुनियादी उद्योगो का औद्योगिकरण :- बाबा साहेब ने बुनियादी व मुलभुत उद्योगो के औद्योगिकरण का लक्ष्य रखा।

* राष्ट्र नियंत्रित अर्थव्यवस्था :- बाबा साहेब का मानना था कि किसी वर्गविशेष को लाभ ना दे कर राज्यनियंत्रित अर्थव्यवस्था मे सभी को लाभ मिले।

* श्रमिक व कृषि कल्याण :- व्यवसायिक शिक्षा के द्वारा श्रमिक व कृषि भुमि के कल्याण का उद्देश्य रखा।

Scanned with OKEN Scanner

(5.) (VI) बाबा साहेब का मूलमंत्र :-

* **शिक्षित बनो** :- शिक्षा को संसार का शक्तिशाली साधन बताया व शिक्षा ग्रहण करने हेतु प्रेरित किया

* **संगठित रहो** :- शक्ति को सामूहिक रूप से बढ़ाने के लिए प्रेरित किया।

* **संघर्ष करो** :- "अधिकार" व "सम्मान" भीख से नहीं संघर्ष से प्राप्त करने हेतु प्रेरित किया।

(6) बाबा साहेब की प्रमुख कृतियां :-

Who are the Shudra ?

Untouchable; who are they ?

emancipation of cast.

(7.) **प्रासंगिकता**

बाबा साहेब ने महिलाओं, शोषितो, श्रमिको, युवाओ को जो महत्वपूर्ण संदेश दिया वह एक प्रगतिशील राष्ट्र के लिए अनिवार्य दस्तावेज है।

तत्कालिन विभिन्न विषय पर बाबा के विचार जितने महत्वपूर्ण थे उससे कही अधिक आज प्रासंगिक हो गए हैं। बाबा साहेब के "बेहतर मेधा के आलोक" मे हम अपने जीवन, समाज, राष्ट्र, को प्रगति पर आगे बढा रहे हैं।

डॉ अम्बेडकर जी को "संविधान के प्रारूप समिति" (27 अगस्त 1947) के अध्यक्ष पद का महत्वपूर्ण दायित्व सौंपा गया था। "दलितो को सामाजिक जीवन मे समानता प्राप्त हो" इसके लिए संवैधानिक व्यवस्था बाबा साहेब के प्रयासो का परिणाम है।

इस कारण बाबा साहेब को "आधुनिक युग का मनु" कहा जाता है।

योगदान

वीक्ष

(8) बाबासाहेब का सम्मान व पुरस्कार :-

(5)

* भारत रत्न सन 1990 में मरणोपरान्त बाबा साहेब को "भारत के सर्वोच्च नागरिक" पुरस्कार दिया गया था।

* बोधिसत्व : सन 1956 में बाबा साहेब के बोधधर्म ग्रहण करने बाद उन्हे यह उपाधि दि गई थी

* जयभीम :- डॉ. भीमराव जी के अनुयायी सम्मान उन्हे "जय भीम" के नारे से पुकारते हैं।

" गुंज उठे गगन सारा
जब गुंजे भीम का नारा "

Scanned with OKEN Scanner

⑤ उपसंघार :-

डॉ. भीमराव अम्बेडकर जी का सम्पुर्ण जीवन दमन, शोषक, अन्याय के विरुद्ध अनवरत क्रान्ति की शौर्य गाथा है। भारतीय समाज के साथ-साथ सम्पुर्ण विश्व मे जहाँ कही भी विषमवादी भेदभाव व छुआछुत मौजुद है, ऐसे समस्त संसार को दमन, शोषण, अन्याय से मुक्त कराने के लिए बाबा साहेब का "जीवन संघर्ष व दृष्टिकोण" "उज्जवल पथ प्रशस्त" करता है।

समतामुलक स्वतंत्रता की गरिमा से पुर्ण बन्धुता वाले राष्ट्र के निर्माण के लिए बाबा साहेब ने देश कि जनता का आह्वान किया।

बाबा साहेब के विचार व कार्य हमे सामाजिक, आर्थिक समृद्धि के तरफ तो ले जा ही रहे है साथ ही मनुष्य को जागरुक कर "मानवीय गरिमा की आध्यात्मिकता" से सुशोभित कर रहे है।

Scanned with OKEN Scanner

(10) अनमोल वचन :-

"ज्ञान प्राप्त करना मनुष्य जीवन का अन्तिम लक्ष्य होना चाहिए"।

"धर्म मनुष्य के लिए बना है मनुष्य धर्म के लिए नहीं",

"मै ऐसे धर्म मे विश्वास करता हू जो भाईचारा सिखाए",

Scanned with OKEN Scanner

1) विशेष कथन :-

डॉ अम्बेडकर जी का जीवन
गंगा की तरह पवित्र
सूर्य की तरह तेजवान
हिमालय की तरह महान
और
एक
उदभट साहस
कठोर साधना
अदमित संघर्ष
की पावन प्राणवान
गाथा है।
जो सत्य व मंगल है।
तथा
उनकी जीवनी
हर व्यक्ति के काम की,
सभी समाज की आवश्यकता है।

क्योंकि वह
अंधेरे को हर कर
उजाले का पथ
प्रशस्त करती है।

Scanned with OKEN Scanner

164

राजस्थान सरकार
डॉ. भीमराव अम्बेड़कर फाउण्डेशन (अम्बेड़कर पीठ),
(सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग)

Seat no. -108

संविधान दिवस के अवसर पर राज्य स्तरीय निबंध लेखन प्रतियोगिता–2024

विषय :– "भारत के सामाजिक एवं आर्थिक विकास में डॉ. भीमराव अम्बेडकर का योगदान"

दिनांक :– 07.10.2025 (समय– 2 घंटा, पूर्णांक– 100 अंक)

स्तर :– विश्वविद्यालय / महाविद्यालय

कार्यालय उपयोग हेतु	मूल्यांकन हेतु

विद्यार्थी का नाम – मुस्कान शर्मा (MUSKAN SHARMA)

पिता का नाम – सुशील शर्मा (SUSHIL SHARMA)

पता पिन कोड सहित – सोहर सिंह नीक, पुरानी आबादी, वार्ड नं. 14/19, श्रीगंगानगर, पिन कोड - 335001

कक्षा – MSC 1st Semester Physics

महाविद्यालय का नाम – डॉ० भीमराव अम्बेडकर राजकीय महाविद्यालय

जिले का नाम – श्रीगंगानगर

मोबाईल न. – 98871-06488

ई–मेल आई.डी. – muskansh280@gmail.com

विद्यार्थी के हस्ताक्षर

वीक्षक के हस्ताक्षर

Scanned with OKEN Scanner

विषय :- "भारत के सामाजिक एवं आर्थिक विकास में डॉ० भीमराव अम्बेडकर का योगदान"

"जीवन लंबा नहीं महान व्यक्तित्व का होना चाहिए।"

प्रस्तावना :-

भारत के आधुनिक इतिहास में सामाजिक असमानता, जाति व्यवस्था एवं आर्थिक असमानताएं इतनी गहरी थी कि स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात भी भारत को एकता तथा न्याय के सूत्र में बाँधना आसान नहीं था। ऐसे समय में आजादी के बाद भी भारत में समग्र उन्नति में बाधाएँ उत्पन्न थी। तब ऐसी स्थिति में –

उस युग में "डॉ० भीमराव अम्बेडकर" ने संकल्प लिया कि केवल राजनीतिक लोकतंत्र ही नहीं, भारत को सामाजिक तथा आर्थिक दृष्टि से भी साकार करना है। उन्होंने अपना समस्त जीवन राष्ट्र के हित में समर्पित किया।

बाबासाहेब केवल संविधान निर्माता नहीं थे – बल्कि सामाजिक क्रांतिकारी, समाज सुधारक, अर्थशास्त्री, आर्थिक चिंतन एवं सभी पक्षों के हित सहित न्यायपूर्ण के महान प्रवक्ता भी थे।

उन्होंने कहा कि "राजनीतिक लोकतंत्र तभी सार्थक होगा, जब सामाजिक तथा आर्थिक लोकतंत्र भी सुसंगत हों"!!

"न्याय हो हम सभी के लिए,
कार्य हों हम सभी के लिए"!!

⇒ इसी के साथ सामाजिक तथा आर्थिक योगदानों पर निम्न-चर्चा करेंगे:-

[A] सामाजिक योगदान ⟹
- जातिव्यवस्था तथा असमानता का उन्मूलन
- शिक्षा और सशक्तीकरण
- संवैधानिक तथा कानूनी सुधार
- सार्वजनिक सांस्कृतिक पुनर्रचना एवं धार्मिक परिवर्तन

[B] आर्थिक योगदान ⟹
- आर्थिक न्याय तथा सामाजिक लोकतंत्र का सिद्धांत
- भूमि विकास एवं कृषि सुधार
- सार्वजनिक क्षेत्रों में जल, विद्युत एवं औद्योगीकरण
- सार्वजनिक वित-कर नीति एवं मुद्रा

∴ अतः इन्हीं आधारों पर वर्गीकृत कर इन विश्लेषणों की व्याख्या करेंगे-

Scanned with OKEN Scanner

[A] सामाजिक योगदान :-

i) जाति व्यवस्था एवं अस्पृश्यता का उन्मूलन :- अम्बेडकर जी की दृष्टि अनुसार आज भी भारत में समाज में छुआ-छूत तथा जाति-व्यवस्था की मनुस्मृति विद्यमान है। उनका कहना कि जब तक यह सामाजिक असमानताएं नहीं टूटी, तब तक राजनीतिक लोकतंत्र निरर्थक रहेगा।

उदा.- ◉ महाड़ सत्याग्रह (1927) के अनुसार बाबासाहेब ने यह आंदोलन समाज के दलित वर्गों को सार्वजनिक जल स्रोतों से पानी लेने व पीने का अधिकार दिलाने हेतु किया। तथा

◉ कालाराम मंदिर सत्याग्रह (1930) के अनुसार सभी पिछड़े वर्गों को धार्मिक समानता हेतु यह आंदोलन किया, ताकि सभी समान अधिकार से मंदिर, मस्जिद में जा सके।

◉ इसी के साथ इन्होंने "मनुस्मृति दहन" जैसे कार्य भी किए तथा जिसमें "Annihilation of caste" नामक मुख्य ग्रंथ भी लिखा। जिसमें जाति-व्यवस्था एवं सामाजिक असमानता हेतु मुख्य खंडन किया गया है।

ii) शिक्षा और सशक्तीकरण :- बाबासाहेब ने शिक्षा को "मुक्ति का मार्ग" बताया।

- सन 1924 में उन्होंने बहिष्कृत हितकारिणी नामक सभा की स्थापना की। जिसका नारा था — "Education, Organise, Agitaty"

- अम्बेडकर साहब ने विद्यार्थियों एवं महिलाओं हेतु छात्रवृति संबंधी योजना, हॉस्टल सुविधाएँ, शिक्षा संबंधी संसाधन जुटाए। तथा स्वयं विदेश गए, वहां जाकर उच्च शिक्षा हासिल की तथा स्वयं को उदाहरण के रूप में सशक्त प्रस्तुत किया।

- अम्बेडकर जी का कहना है कि "शिक्षा केवल शैक्षिक ज्ञान नहीं है बल्कि सामाजिक समानता की चेतना, व्यावहारिक कौशल, भावना ज्ञान तथा नेतृत्व की कला जीने को विकसित करती है।"

iii) संवैधानिक तथा कानूनी सुधार :-

डॉ० भीमराव अम्बेडकर को संविधान का मुख्य निर्माता के रूप में नियुक्त किया था। तब उन्होंने यह सुनिश्चित किया कि "सामाजिक तथा समानता केवल लेख में न हो, बल्कि लागू भी हो"!!

⇒ इसी आधार पर कुछ कानूनी सुधार किए गए जो कुछ निम्न है:-

◉ मौलिक अधिकार – अनुच्छेद [14, 15, 16, 17] के अनुसार भेदभाव निषेध, सामाजिक असमानता तथा अस्पृश्यता का उन्मूलन हेतु अधिकार प्रस्तावित किए गए।

◉ संवैधानिक अवसर अधिकार – (आरक्षण नीति) बाबासाहेब ने इस पर वकालत की कि सभी दलित एवं पिछड़े वर्गों (ST, SC, OBC) को समान शिक्षा तथा नौकरी अवसर तथा राजनीतिक प्रतिनिधित्व का अवसर अधिकार प्रदान हो।

◉ Poona Pact (1932) – सभी दलित वर्गों को विशेष प्रतिनिधित्व हेतु राजनीतिक स्वीकारता का अधिग्रहण दिलाया गया।

◉ नीति-निर्देश :– इसके माध्यम से शिक्षा, स्वास्थ्य, कल्याण जैसी सभी क्षेत्रों में सेवाएं हेतु अधिकारिता प्रदान की गई।

◉ Hindu Bill code – इसके अनुसार बाबा ने कहा कि महिला अधिकारों और विवाह, विरासत में समान अधिकारों की एक रिक्ता दी जाए, ऐसा सामान्य प्रस्ताव पारित किया गया था।

Scanned with OKEN Scanner

iv. सांस्कृतिक पुनर्रचना एवं धार्मिक परिवर्तन :-

अम्बेडकर जी का मानना था कि समाज में आर्थिक सामाजिक समानता को बढ़ाना है तो सांस्कृतिक तथा धार्मिक परिवर्तन भी करने होंगे। तब -

- सन 1952 में अम्बेडकर जी ने बौद्ध धर्म को स्वीकार किया तथा बहुत से दलितों को दीक्षा दी। समाज में उनके इस कदम को आत्मसम्मान तथा धार्मिक रूप से स्वीकारा गया।

- उनका मानना था कि "जहाँ संस्कृति तथा धर्म को स्वीकारा जाता है, वहाँ कार्य सामने बोलने से फर्क नहीं पड़ता, सभी कार्य मन बुद्धि एवं शांति परिवर्तन से ही हो जाते हैं।"

[B] आर्थिक योगदान :-

i. आर्थिक न्याय तथा सामाजिक लोकतंत्र का सिद्धांत :-

अम्बेडकर जी के अनुसार यदि आर्थिक असमानताएँ बढ़ी हुई हैं तो राजनीतिक लोकतंत्र अधूरा है। उन्होंने "सामाजिक तथा आर्थिक न्याय को लोकतंत्र का मुख्य अंग माना।"

Scanned with OKEN Scanner

- अम्बेडकर जी केवल राजनीतिज्ञ नहीं थे - बल्कि अर्थशास्त्री तथा मिश्रित अर्थव्यवस्था के संस्थापक भी थें।

- The Problem of the rupee में उन्होंने मुद्रा-स्फीति, मुद्रा नियंत्रण तथा मुद्रा-मूल्य स्थिति की चुनौतियों का भी सामना किया।

- उन्होंने अपने आर्थिक असमानता से जुड़े तीन मुख्य ग्रंथ लिखे -
  i. Administration and finance of the east india Company.
  ii. The evolution of Provincial and Finance in british india.
  iii. The Problem of the rupee.

⇒ तथा इसी के साथ भारत को साकार तथा आर्थिक समान एवं न्यायपूर्ण बनाने हेतु तीन सशक्त मुख्य अंग बताए - i. Faithfulness (वफादारी)
ii. Wisdom (बुद्धिमता)
iii. Economy (मितव्ययिता)

ii. कृषि विकास एवं भूमि सुधार :-

बाबासाहेब ने पहले कृषि आधारित समस्याएं जैसे- जमींदार तथा किसानों के मध्य दूरी, लेन-देन, समाज असमानता जैसी दिक्कते देखी। तब उन्होंने "भूमि अधिग्रहण तथा जमीं के सुधार" करने हेतु वकालत की।

- बाबासाहेब ने आधुनिक कृषि तकनीकों को विकसित करने के अनुसार— सिंचाई, बांध निर्माण तथा जल प्रबंधन हेतु जैसे सुधार कार्य किए।
- उनका कहना था कि "कृषि केवल उत्पादन वृद्धि नहीं बल्कि समाज को आर्थिक व्यवस्था से जोड़ने की अहम भूमिका है।"

iii. सार्वजनिक क्षेत्रों में जल, विद्युत एवं औद्योगीकरण :-

सार्वजनिक क्षेत्रों में आर्थिक असमानताओं को सुधारना आवश्यक होता है ताकि जनता के हित में सभी कार्यों को सफलता मिले एवं नीति-निर्देश अनुसार कार्य पर बल दिया जाए।

⇒ बुनियादी संरचना - जैसे-जल, विद्युत, परिवहन आदि में सहयोग करना ही सामाजिक तत्व है। तथा उनकी बिजली जीवन की धारणा को बचाना ही आर्थिक सहयोग है। जब तक नहरों में पानी का बहाव रहा, तब तक अम्बेडकर जी ने किसानों को सभी सुविधाएं उपलब्ध करवाई।

Scanned with OKEN Scanner

iv) सार्वजनिक वित - कर नीति एवं मुद्रा :-

- अम्बेडकर जी का कहना था कि "आर्थिक असमानता के लिए कानून बनाना आते सरल हैं किंतु लागू करना नहीं।" इस हेतु वित- कर दृष्टि से राजनीतिक एवं नियोजक संबंध जवाबदेही नीति प्रभावित होती है।

- अम्बेडकर जी के तीन मुख्य सिद्धांत - "वफादारी, बुद्धिमता, मितव्ययता" तो आज भी प्रचलन में ही है। इसी के साथ मुद्रा संबंधी "मुद्रा स्थिति, मुद्रा नियंत्रण, मुद्रा स्फीति", जैसी चुनौतियों का वित- कर नीति में सामना करना पड़ता है।

- अम्बेडकर जी ने रोजगार विनिमय के सुसंसाधन भी सुझाएं, जिससे समाज में बेरोजगारों को रोजगार प्राप्त हो सके तथा सामाजिक स्थिति में आर्थिक सहयोग कर सके।

- उन्होंने "वित्तीय संघीयता की स्थापना की तथा संघ महत्व समझाया ताकि राज्यों को वित्तीय स्वायत्तता मिल सके।" राज्यों को अति आर्थिक लाभ की प्राप्ति हो सके।

⟹ अतः इसी आधार आर्थिक चुनौतियों का सामना वित-कर नीति में अधिक है, क्योंकि यहां हर समाज पर कर वसूल एवं अधिकार होता है।

[C] आलोचनाएँ, चुनौतियाँ एवं सीमाएँ :-

[D]

- अम्बेडकर जी के सभी सिद्धांतों के अनुसार उन पर आधिक आलोचना है कि उनके सभी कार्य व हित राज्यकेंद्रित थे, उनका निजी क्षेत्रों में कुछ खास महत्व नहीं था।
- भूमि सुधार योजनाएं तो कई राज्यों में अधूरी रह गई, क्योंकि राजनीतिक निष्पक्षण एवं आर्थिक सहयोग की कमी रही।
- सामाजिक असमानता में धीमी गति थी, क्योंकि समाज में सभी के प्रति अकस्मात मनुस्मृति बहलाव एक चुनौती थी।
- अम्बेडकर ने वैश्विक समस्याओं, वैश्वीकरण, सूचना तौद्योगीकरण आदि में बहुत सी राजनीतिकता की परंतु उनके परिणाम अनुकूल नहीं थे।
- नीति-निर्देश क्रियान्वयन नीति तथा जवाबदेही धीमी रही, जिसके कारण राजनीतिक लोकतंत्र का विकास प्रभावहीन होता गया।

⇒ अम्बेडकर जी का मानना था कि वह सभी कार्य देश के हित में कर रहे हैं परंतु खामियां भी हैं, जो उन्होंने अंतिम में चेतना हेतु प्रस्तुत की !!

"

[D] समकालीन प्रासंगिकता :-

- आज भी वर्तमान में जातिव्यवस्था, आर्थिक असमानता तथा अस्पृश्यताएं विद्यमान हैं। क्योंकि हमारा समाज परिवर्तन को स्वीकार नहीं करना चाहता। इस पर अम्बेडकर ने जो कहा वह हमें याद दिलाता है कि — हमें समानता और न्याय को अपनाना होगा।

- भारत में "सामाजिक लोकतंत्र" में यह चेतना है कि हमें केवल राजनीतिक लोकतंत्र से नहीं बल्कि सामाजिक व आर्थिक समानता से न्यायपूर्ण मार्ग प्रस्तुत करने होंगे।

- "**बुनियादी संरचना**" — जल, विद्युत, शिक्षा, स्वास्थ्य, कल्याण जैसी योजनाएं सदैव विद्यमान रहें। तथा "अम्बेडकर के अनुसार समान, निवेश, समावेशी विकास हो।"

- **कुछ प्रमुख आर्थिक संकट जैसे** — रोजगार संकट, जल संकट, भूमि संकट, आत्मसम्मान, निवेश की आवश्यकता जैसे संकटों को दूर करना आवश्यक है। तथा
  ⇒ कल्याणकारी योजनाएं, सामाजिक कार्यक्रम का होना अंबेडकर के द्वारा प्रचलित किया जाना चाहिए।

[E] उपसंहार तथा निष्कर्ष :-

डॉ० भीमराव अम्बेडकर बाबासाहेब ने भारत में राजनीतिक लोकतंत्र के साथ सामाजिक एवं आर्थिक समानता तथा न्याय की पुनः नींव स्थापित की। उन्होंने अपने हर संभव दृष्टि के अनुसार सभी कार्य हर क्षेत्र में किए। उन्होंने अपना जीवन इन्हीं सामाजिक कार्यों में राष्ट्र के प्रति समर्पित किया।

"समानता का भाव उठे,
जाति के जंजीर घर-बंधन से छूटे!
शिक्षा की ज्वाला जब हर घर फैल जाए,
तब अम्बेडकर का सपना, वही साकार हो जाए!!"

⇒ इन्हीं कुछ पंक्तियों के आधार पर हम कि आर्थिक समानता केवल जीडीपी दृष्टि से नहीं बल्कि समान समावेश एवं न्यायपूर्ण से विकसित की जानी चाहिए। जिससे देश का सही मायने में संभव विकास हो सके।

Scanned with OKEN Scanner

⇒ अतः निष्कर्ष तौर पर है कि शिक्षा का प्रसार सभी तरफ होना चाहिए। केवल हमें कानूनी तौर पर कानून को लेखों में न रखकर हकीकत में लागू करने चाहिए।

- हमें समझना होगा कि कानून हमारे लिए ही है। सभी नीतियों का पालन हमें करना होगा। क्योंकि समय-समय पर अधिकारों, नियमों में परिवर्तन आवश्यक होता है।

- "भारत को "समान, समावेशी तथा न्यायोचित" भारत रचने की कल्पना डॉ॰ भीमराव अम्बेडकर ने ही स्थापित किया था, जिसके तहत भारत को साकार व एकता में बंध के तीन मुख्य तत्व थे —
  - i) समता
  - ii) आजादी
  - iii) बंधुत्व"

"तब-तक चैन नहीं हमें, जब तक हर बच्चा न पढ़े,
हाथों में समान अधिकार एवं मन में उत्साह बढ़े!
आओ सब मिलकर ये भेदभाव हटाएं-मिटाएं,
हम भारतवासी एकता के बंधन से जुड़ जाएं!!"

समाप्त

धन्यवाद !!

Scanned with OKEN Scanner